शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

की प्रस्तुति

शैक्षिक गीतों का संग्रह

गीतांजलि सृजन

माह- नवम्बर-2022

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ। #9458278429

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 01/11/2022

दिन- मंगलवार

133

तर्ज़ - मेरा प्यार वो है कि.....

मेरी प्यारी बेटी है, वरदान प्रभु का,
कृपा करती बन के लक्ष्मी स्वरूपा।
मिलेगी जो बेटी तो, खिलेगा वो आँगन,
बेटी के बिन सूना, लगेगा वो आँगन ।।
मेरी प्यारी बेटी....

जहां में तो बेटी को लाना ही होगा,
नयी जिन्दगी भी तो बेटी ही देगी।
मिलेगी तभी उसको, प्यारी सी दुनिया।
बचाओ तो बेटी, तभी तो पढ़ेगी,
हकीकत में दुनिया बेटी से चलती।
कभी भी न इसको बदला जा सकेगा।।
मेरी प्यारी बेटी.....

बिटिया भी पढ़ने का अधिकार रखती,
एक नहीं दो कुल को भी चलाती।
बेटा तो केवल वंश को चलाता,
बेटी तो वंश को आगे बढ़ाती।
कोमल हृदय से, प्यार सबको देती,
नहीं बोझ है, बोझ सबका है ढोती।
रौनक है घर की, खुशियाँ बढ़ाती।।
मेरी प्यारी बेटी है.....

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली(1-8)
अमौली, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 02/11/2022

दिन- बुधवार

134

गीत- शिक्षा हमारा अधिकार

तर्ज- मेरे हाथों में नौं-2 चूड़ियाँ है

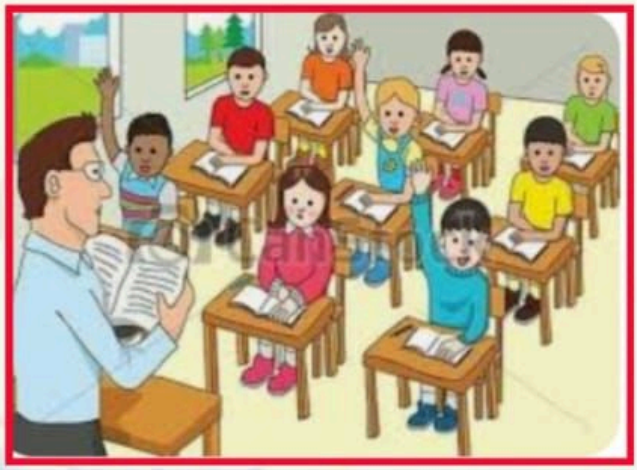

स्कूल से कैसी दूरियाँ हैं?
बताओ तो क्या मजबूरियाँ हैं।
शिक्षक तुम्हें हैं पढ़ाते,
नया ज्ञान हैं तुमको सिखाते।
प्यार से तुमको गले लगाते,
जीवन की राह हैं दिखाते।।
फिर कैसी ये मजबूरियाँ है?
स्कूल से कैसी दूरियाँ है?

खेल तुमको नये हैं खिलाते,
टी. एल. एम. से तुम्हें हैं सिखाते।
कितना सुन्दर है ये पुस्तकालय!
कहानियाँ हैं तुमको पढ़वाते।।
सजी चेहरों पर नयी खुशियाँ हैं,
स्कूल से कैसी दूरियाँ है?

गीत, कविता, कहानी सिखाते,
नयी-नयी पहेलियाँ हल कराते।
अन्धविश्वासों से हमको बचाते,
नया दृष्टिकोण हैं बनवाते।।
फैली हर तबके में खुशियाँ है,
स्कूल से कैसी दूरियाँ है?

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर (1-8)
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 03/11/2022

दिन- गुरुवार

135

वीर अभिमन्यु

तर्ज - तूने ओ रंगीले कैसा जादू किया

मेरे अपनों ने ही प्रहार किया,
मुझ निहत्थे का संहार किया।
दबा बगल में छुरी वार किया।।
भेदा जिया। हो.....

किया जो दावा, सब था छलावा, तुम थे एक अभिनेता।
मैं हूँ इक बालक, धर्म का पालक, हो तुम अधर्मी नेता।।
घात लगा, आघात किया। भेदा जिया।। हो.....

माँ ने बताया, गुरु ने सिखाया, जहाँ ये नहीं है किसी का।
समझ न आया, अकेला ही आया, लाभ उठाया है इसी का।।
तीरों से दिल ये छलनी किया, भेदा जिया।। हो.....

वीर अभिमन्यु, ने तोड़ दिया चक्रव्यूह, जो कौरवों ने रचा था।
बढ़ता ही आया, निकल न पाया, स्वजनों से वो घिरा था।।
अपनों ने ही तो मार दिया, भेदा जिया।। हो.....

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
क्षेत्र- धनीपुर, अलीगढ़, उ०प्र०

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 04/11/2022

दिन- शुक्रवार

136

तर्ज़- मुझे इश्क है तुझी से

एक भ्रूण की कसक

मेरी माँ जरा बता दो, मुझे कोख में क्यों मारा?
मानवता और ममता, कहाँ प्रेम है तुम्हारा?

सन्तान मैं तुम्हारी, आँगन की हूँ फुलवारी।
ना आने दिया जग में, ऐसी भी क्या लाचारी?
माँ मेरी तमन्ना थी, तेरा बनूँ सहारा।
मानवता और ममता, कहाँ प्रेम है तुम्हारा?

बारात मेरी आती, घर बाजती शहनाई।
बाबुल के द्वारे से माँ, मेरी होती जब विदाई।
दिल रोता है सुता का, चमका नहीं सितारा।
मानवता और ममता, कहाँ प्रेम है तुम्हारा?

तेरी बगिया की मैं तितली, उड़ती-फिरती गगन में।
फूलों की प्यारी खुशबू, बिखराती इस चमन में।
मुझे धीर बन्धा हे जननी! अब कहाँ गया किनारा?
मानवता और ममता, कहाँ प्रेम है तुम्हारा?

बेटों से बेटी को क्यों? कमजोर समझते प्राणी।
वरदान यह ईश्वर का, बेटी ही जीवनदायिनी।
बेटा आँखों का तारा, तो बेटी है उजियारा।
मानवता और ममता, कहाँ प्रेम है तुम्हारा?

रचना

मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 05/11/2022

दिन- शनिवार

137

तर्ज: जन्म जन्म का साथ.....

ज्ञान का पिटारा

मिशन शिक्षण संवाद है ये ज्ञान का पिटारा,
ऐसा ज्ञान का पिटारा।
बच्चों की राहों को इसने ज्ञान से संवारा,
ऐसा ज्ञान का पिटारा.....

सभी शिक्षकों का ये साथी करे सरल ये काम,
ज्ञान का पुष्प खिलाया, जग का किया उत्थान।
अज्ञान का हरण किया, चमकाया ज्ञान का तारा।।
मिशन .....

हो कोई प्रतियोगिता या कोई एग्जाम,
विधियाँ इसकी ऐसी, हर मुश्किल हो आसान।
शिक्षा जगत में ऐसे चमके जैसे कि ध्रुव तारा।।
मिशन.....

जबसे जुड़े सब इससे सपने हुए साकार,
उचित राह दिखायी, बच्चों का किया उद्धार।
विमल त्याग की टीम ने बदली सबकी जीवनधारा।।
मिशन.....

रचना

शालिनी गुप्ता (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय
(कम्पोजिट)
म्योरपुर, सोनभद्र

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 07-11-2022

दिन- सोमवार

138

तर्ज- फूलों और तारों का सबका कहना है...

गीत- स्वास्थ्य ही गहना है

हमारा तो तुम सबसे यही कहना है,
स्वस्थ शरीर सबसे अच्छा गहना है।
हमेशा हमें स्वस्थ रहना है,
हमारा तो तुम सबसे यही कहना है।।

हरी सब्जी खायेंगे जब हम भरपूर,
रोगों को मिटायेंगे जीवन से दूर।
सुबह जल्दी उठना, रात को जल्दी सोना है,
अगर हम सबको स्वस्थ रहना है।।
हमारा तो.....

दालों में होता है प्रोटीन प्रचूर,
रात को दूध पीना न जाना भूल।
मौसमी फलों को लेते रहना है,
अगर हम सबको स्वस्थ रहना है।।
हमारा तो.....

सफाई जो घर में रखते नहीं हैं,
बीमारियों से वह लोग बचते नहीं हैं।
स्वस्थ रहना है तो स्वच्छ रहना,
हमारा तो तुम सबसे यही कहना है।
स्वस्थ शरीर ही अच्छा गहना है।।
हमारा तो.....

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 08-11-2022

दिन- मंगलवार

139

तर्ज- कार्तिक गीत

गीत- छायी अजब सी बयार...

छायी अजब सी बयार जगत में।
छायी अजब सी बयार...।।

चारों ओर मचा सूनापन..२।
सहमे सब नर-नारि जगत में,
छायी अजब सी बयार....२।।

रुंधी-रुधीं साँसें हैं सबकी..२।
जीवन है बेजार जगत में,
छायी अजब सी बयार..२।।

छायी धुंध प्रदुषण बढता..२।
कटे पेड़ लाचार जगत में,
छायी अजब सी बयार..२।।

वृक्ष लगाओ हटे प्रदुषण..२।
जीवन हो गुलजार जगत में,
छायी अजब सी बयार..२।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 09/11/2022

दिन- बुधवार

140

प्रीत के दीप

तर्ज़- नीले गगन के तले.....

दिये से बाती मिले,
प्रीत के दीप जले।
ऐसे ही दिल से,
गले हम भी मिले।।

दिये से बाती मिले,
प्रीत के दीप जले।

अनगिनत ये ज्योति,
धरती पे बिखरे,
अँधेरा मिटाने चले।
दिये से बाती मिले,
प्रीत के दीप जले।।

लहराती पवन ये,
कहती है हमसे,
ख़ुशबू लिए हम चले।
दिये से बाती मिले,
प्रीत के दीप जले।।

रचना:
रुखसाना बानो (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अहरौरा
जमालपुर, मिर्ज़ापुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 10/11/2022

दिन- गुरूवार

141

गीत- समाज

तर्ज़- लोकगीत

बदलत बा समाज के रूपवा,
गाँव, घरे, बाजारे।
अँखिया देखत-देखत रोवे,
जियरा जाता हारे।।

लाज-लिहाज बड़े-छोटन क,
होई गयल बेमानी।
खाली आपन हर केहू देख,
करत जात मनमानी।।
दया, प्रेम बा निरा देखावा,
मतिया जाता मारे।
अँखिया देखत.....

बचपन छिनल जात लइकन क,
दुआर कम हो गइलें।
पास-पड़ोस क भाई-बंदी,
हर केहू बिसरत गइलें।।
रुपिया में अब नाहीं मिलत कुछ,
दस, बीस, सौ के सहारे।
अँखिया देखत.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
वि० क्षे०–बड़ागाँव
जनपद–वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 11/11/2022

दिन- शुक्रवार

142

आलू की बारात

तर्ज़- यू पी वाला ठुमका लगाऊँ .....

आलू की बारात आयी,
कै धनिया मिरची नाचन कू आयी।
संग ते नाचे मूरी ताई,
कै धनिया मिरची नाचन कू आयी।।

घूँघट में ते झाँक रई मटर,
लाली लगा कै सज रई गाजर,
सरम ते लाल टमाटर भाई।
कै धनिया मिरची नाचन कू आयी।।

देखो सज गयौ कड़ुआ करेला,
बाराती बन गयौ कच्चौ केला,
छोरी ब्रोकली है छायी।
कै धनिया मिरची नाचन कू आयी।।

खुसी लुटावत बैगन कारौ,
कद्दू फूलो रहबे बारौ,
बाय मनावन गोभी आयी।
कै धनिया मिरची नाचन कू आयी।।

रसोई में छा रई है बहार,
लाग रहयो है आयो त्यौहार,
मारकिन ने मिलमा सब्जी बनायी।
भिन्डी की रै गई मौ दिखाई।।

रचना

हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 12/11/2022

दिन- शनिवार

143

प्रकृति प्रेम

तर्ज- देना है तो दीजिए..

नदी, धरा और वृक्ष आसमाँ,
निभा रहे अपना किरदार।
बदले में कुछ ना लेते,
हर पल देते हैं उपहार।।
आओ सीखे इनसे,
क्या? होता परोपकार।
प्रेम प्रकृति से कीजिए,
जीवन का यह सार।।

मतवाला चंचल मन तेरा,
मानुष इसे संभाल।
प्रेम प्रकृति से कीजिए,
जीवन का यह सार।।

सींच धरा को नेह से बन्दे,
वसुधा का श्रंगार तू कर।
धर्मग्रन्थों में माँ वर्णित है,
माँ का यूँ अपमान न कर।।
प्रगति की चाहत में माँ पर,
ना कर तू अत्याचार।
प्रेम प्रकृति से कीजिए,
जीवन का ये सार।।

व्याकुल होकर मानुष तू,
कर्तव्यों से मुख मोड़ गया।
प्रकृति नियन्त्रण की चाहत में,
मानवता को कुरेद गया।।
बैर ना कर अब प्रकृति से,
होगी बस तेरी हार।
प्रेम प्रकृति से कीजिए,
जीवन का ये सार।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 14-11-2022

दिन- सोमवार

144

तर्ज- ये मत कहो खुदा से....

गीत- बाल मजदूरी निषेध

ये मत कहो बच्चों से मजदूरी तुम्हें करना है।
उन बच्चों से कह दो तुमको अभी पढ़ना है।।

होटल, कारखानों में ऐसे बच्चे मिलते हरदम।
उन बच्चों के सामने भविष्य पूरा पड़ा है।।

मजबूरी में कोई बच्चा मजदूरी है करता।
बचपन में काम करना अभिशाप यह बड़ा है।।

ये मत कहो बच्चों से मजदूरी तुम्हें करना है।
उन बच्चों से कह दो तुमको अभी पढ़ना है।।

ऐसे बच्चों की खातिर खुले स्कूल के द्वारे।
स्कूल में अध्यापक स्वागत के लिए खड़ा है।।

सारी सुविधाएँ इनको मिलेंगी, स्कूल तो इनको लाओ।
फल, दूध, खाना सब इनके लिए बना है।।

जब कोई बच्चा प्रतिदिन स्कूल मे है पढ़ता।
पढ़-लिखकर वह अच्छा नागरिक बना है।।

ये मत कहो बच्चों से मजदूरी तुम्हें करना है।
उन बच्चों से कह दो तुमको अभी पढ़ना है।।

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

145

तर्ज- हे महावीर हनुमान

गीत- मेरे देश की गाथा

भारत की रीत बताते हैं,
प्रेम का गीत सुनाते हैं।
अपनेपन, भाईचारे का हम,
पाठ पढ़ाते हैं।
भारत-------

इस देश की मिट्टी में कृष्ण और राम जन्मे हैं।
राधा, मीरा और सीता का नाम मन में है।
श्रद्धा और भक्ति की हम,
अलख जगाते हैं।
अपनेपन भाईचारे----

भगत सिंह, आजाद, बोस ने दी थी कुर्बानी।
तिलक, लाजपत की शौर्यता गाते जुबानी।
रानी लक्ष्मी के चरणों में हम
शीश नवाते हैं।।
अपनेपन भाईचारे----

गंगा, यमुना और सरस्वती की बहती है धारा।
भारत माँ की जयकार से गूँजे है नभ सारा।
हम शान से अपने ध्वज की
परचम फहराते हैं।।
अपनेपन भाईचारे----

रचना-
ऋतु अग्रवाल (स०अ०)
रागिनी संगीतशाला,
ब्रह्मपुरी, मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 16/11/2022

दिन- बुधवार

146

तर्ज: आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ.....

प्यारे बच्चे

प्यारे-प्यारे बच्चे है ये, भारत देश की आन है।
नन्हे-नन्हे कोमल सपने,प्यारी सी मुस्कान है।।
मधुरिम सुन्दरम्.....

सच की राह पर चलते हैं,गलत नही कुछ करते हैं।
निर्मल कोमल हृदय है इनका,इनसे देश का मान है।।
वन्देमातरम्.....

तारों सा ये टिमटिम करते,फूलों जैसा हँसते हैं।
नील गगन की शोभा तारे,ये घर आँगन में सजते हैं।।
जग इनसे है रोशन.....गगनम् सदृशम्.....

शिक्षा से बच्चों को हमको,निडर सबल बनाना है।
सच की राह पर चलते रहना, यही सबक सिखाना है।।
बच्चों में दिखता भारत का उज्जवल स्वर्ण विहान है....

अतीव सुन्दरम्.....
रूठे पल में माने पल में ,मन कितना निर्मल पावन है।
खूब पढ़ेंगे-खूब बढ़ेंगे,उज्जवल इनका जीवन है।।
भारत की प्राण वायु है ये इनसे भारत का मान है....

रचना

शालिनी गुप्ता (स०अ०)
उ० प्रा० वि० मुर्धवा (कंपोजिट)
म्योरपुर, सोनभद्र

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 17.11.2022

दिन- गुरुवार

147

तर्ज़- तेरे जैसा यार कहाँ...

गीत- निपुण भारत

छात्रों को मेहनत से,
हमें है पढ़ाना।
अपने विद्यालय को,
है निपुण बनाना।।

छात्रों को.....

हर एक वर्ण की,
हम उसे पहचान कराएँ।
पढ़ना फ़िर हम उसे,
अर्थ के साथ सिखाएँ।।

हर अर्थ चाहिए,
उसकी समझ में आना।
अपने विद्यालय को,
है निपुण बनाना।।

हिसाब आयें उसे सारे,
जब दुकान पर वो जाये।
न लूट सके कोई,
वो धोखा कभी न खाये।।

गणित की बारीकियाँ,
उसे है समझाना।
अपने विद्यालय को,
है निपुण बनाना।।

छात्रों को.....

रचना- भावना तोमर (स0अ0)
प्रा0 वि0 न01 मवीकलां
खेकड़ा, बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 18/11/2022

दिन- शुक्रवार

148

तर्ज़- बाबुल की दुआएँ लेती जा

गीत- दहेज एक अभिशाप

बेटों पर बरसती हैं खुशियाँ,
बेटी को अबला बना दिया।
इस दहेज रूपी दानव ने,
बेटी को जिन्दा जला दिया।।

उस पिता के दिल का हाल सुनो,
चुपके-चुपके वह रोता है।
कैसे मैं पीले हाथ करूँ?
दिन-रात सोचता रहता है।
लालच के दलदल में फंसकर,
लोगों ने बेटी को स्वाह किया।

अरमानों की लगती बोली,
पैसों के बल बिकती नारी।
शादी तो एक बहाना है,
लालच की यह दुनियादारी।।
माँ सारी खुशी लुटा करके,
बेटी को घर से विदा किया।।

बेटी घर की फुलवारी है,
सपनों का संसार संजोती है।
यह प्रेम आस्था की देवी है,
माँ के नैनों की ज्योति है।।
साँसें घुटती चीखें उठती,
जीवन को इनके तबाह किया।।

इस दहेज से ही जन्मा है,
भ्रूण हत्या का यह पाप भारी।
निष्ठुर समाज के लोगों की,
अब मति गयी बिल्कुल मारी।।
माँ-बाप के कन्धों पर देखो,
बेटी को बोझ बना दिया।।

रचना

मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

दिनांक- 19-11-2022

गीतांजलि

दिन- शनिवार

149

बेटी बचाओ, बेटी बढ़ाओ

तर्ज ~ विदेशिया

दुनों कुलवा नमवां हम तोहरो बढ़ाईब,
दुनिया देखे क अधिकार द विदेशिया।।

सीता, सती, अनुसूया क मान हम बढ़ाईब,
जनम से पहिले नाहीं मार ए विदेशिया।।

बेटा बेटी साथ-साथ पढ़े चली जाइब,
नमवां लिखाइब आसमान रे विदेशिया।।

तोहरे ही घरवां हईं सोने चिरैया हो,
उड़ें खातिर देइं आसमान रे विदेशिया।।

सोने क पिजड़ा हमें नहीं चाहीं हो,
जिंदगी बनाइब शानदार हो विदेशिया।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
जनपद- गोरखपुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 21/11/2022

दिन- सोमवार

150 गीत- बचपन

तर्ज़- लोकगीत

बचपन बाटे ई उमरिया,
मनवाँ मोह जाला।
अइसन बालपन अनोखा,
सुख देइ जाला।

लागे नीक बचवन क,
तोतली जबानियाँ।
गिरत-परत चलिया पे,
हँसत किरनियाँ।।
देवदूत जइसन ओनकर,
हर अंदाज निराला।
बचपन.....

दादी, नानी, माई, मौसी,
सबके हुलसावें।
लेई-लेई गोदिया में,
सब दुलरावे।।
सुख सागर जहनवाँ क,
मिल जाला।
बचपन.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
वि० क्षे०-बड़ागाँव
जनपद-वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 22-11-2022

दिन- मंगलवार

151

तर्ज- प्यार काहे बनाया राम ने...

गीत- बच्चों! पढ़-लिख बनो कुछ जहां...

बच्चों! पढ़-लिख बनो कुछ जहां,
अनपढ का जीवन कोई काम न।।

ये जीवन मिला है, सौभाग्य है तुम्हारा।
अविरत है इसकी धारा, इसका नहीं किनारा।
सभी जगत के हैं स्वाद नित्य-निरन्तर,
अनुभव किया है जिसने, वह भाग्यशाली है नर।
वन कर्मवीर ईश्वर ये चाहे, हाँ!
अनपढ का जीवन कोई काम न।।

ये जीवन ज्यों नदिया की धारा बहे,
छोड़ो इसमें खुद को, न शिकवा रहे।
करो कर्म, अर्पण ईश्वर को तुम,
मिले कर्मफल तुमको, होगे न गुम।
हाँ! तुम सब जग में साथ चलना,
अनपढ का जीवन कोई काम न।
बच्चों! पढ़-लिख बनो कुछ जहां,
अनपढ का जीवन कोई काम न।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि- बम्हौरी
वि० क्षे०- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी (उ०प्र०)

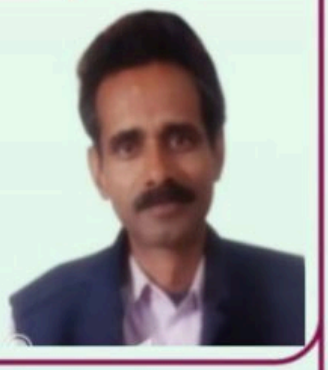

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 23/11/2022

दिन- बुधवार

152

स्वच्छ भारत

तर्ज- फूलों का तारों का..

स्वच्छ भारत का सपना अपना है,
बीमारियों से जो बच के रहना है।
सफाई का ध्यान रखना है,
स्वच्छ भारत का सपना अपना है।।

सूखा, गीला कचरा हो एक दूजे से दूर,
तन-मन की सफाई भी करना जरूर।
बापू के सपने को पूरा करना है,
बीमारियों से जो बच के रहना है।।
सफाई का ध्यान.....
स्वच्छ भारत.....

एक कदम स्वच्छता की ओर

गांव की गलियों में क्यों गंदगी भरपूर,
शौचालय से रहते हो तुम सब क्यों दूर।
खुले में शौच को अब न कहना है,
बीमारियों से जो बच के रहना है।।
सफाई का ध्यान.....
स्वच्छ भारत.....

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 24/11/2022

दिन- गुरुवार

153

तर्ज-सजन रे झूठ मत बोलो
गीत- नयी पीढी के नौजवानों

नयी पीढ़ी के नौजवानों,
तुम्हें यह देश चलाना है।
अशिक्षा और गरीबी से,
तुम्हें सबको बचाना है।।
नयी पीढी के.....

निगाहें हैं तुम पर सबकी,
तुम पर सबका भरोसा है।
माता-पिता ने तुमको,
इसीलिए पाला और पोसा है।।
कन्धों पर तुमको ये भार उठाना है।
नयी पीढी के....

कष्ट जितने तुम सह लोगे,
अग्नि में जितने तप लोगे।
जीवन की राहों में तुम,
आगे उतना ही निकलोगे।।
संघर्षो में तपकर तुम्हें जीना सिखाना है।
नयी पीढी के....

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर (1-8)
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 25-11-2022

दिन- शुक्रवार

154

तर्ज- भइया मेरे राखी के बन्धन को निभाना....

भइया मेरे! बेटी को अपनी पढाना,
भइया मेरे इनके भविष्य को बनाना।
देखो इनको खूब पढ़ाना-पढ़ाना
अच्छी बातें सीखना-सिखाना
भइया मेरे.....

ये घर आयें, खुशियाँ लायें,
दो कुल का यह मान बढ़ायें।
इनकी हिम्मत बढ़ाना-बढ़ाना
भइया मेरे.....

कोख में जो बेटी मारी,
खो दोगे तुम फिर एक नारी
बोली बेटी माँ न मारो,
मुझको तुम अपना बना लो।
मेरा अस्तित्व न मिटाना-मिटाना
भइया मेरे....

गीत- बेटियाँ

जब हम इनको खूब पढ़ायें,
यह दुनियाँ में नाम कमायें।
बिटिया पराई रीत पुरानी हटाओ
इनको भी आगे बढ़ना सिखाओ
इनको भी आगे बढ़ाना-बढ़ाना
भइया मेरे...

रचना- शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 26.11.2022

दिन- शनिवार

155

तर्ज़- हे रोम रोम में बसने वाले राम...

गीत- जागो हे इंसान

हे नींद में सोये जागो तुम इंसान!
कर नवनिर्माण, बना अपनी कुछ पहचान।
कि तुम हो धरा की सन्तान,
कि तुम हो धरा की सन्तान।।

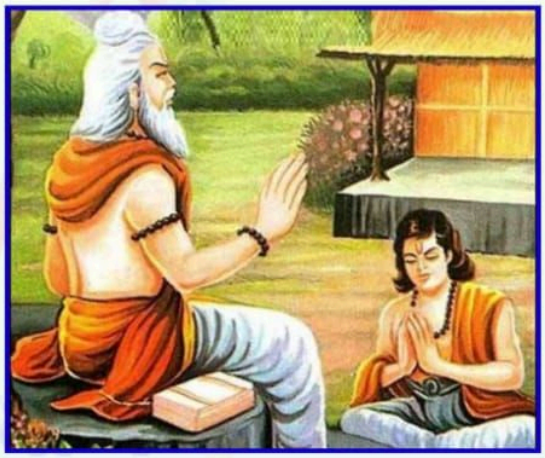

सूरज कब का सिर पर चढे है,
कर्म की गठरी बाँधे खड़े हैं।
नैतिकता का पाठ पढ़ा जा,
कल की पीढ़ी को कुछ करके दिखा जा।।

तू कर दे आज कमाल,
कि तुम हो धरा की संतान।
कि तुम हो धरा की संतान,
हे नींद में सोये जागो तुम इंसान!

इस धरती को स्वर्ग बना दे,
हरियाली चहुँ ओर उगा दे।
प्रदूषण को दूर भगा दे,
ऑक्सीजन भरपूर दिला दे।।

सन्देश दे रहे तुझे भगवान,
कि तुम हो धरा की सन्तान।
कि तुम हो धरा की सन्तान,
हे नींद में सोये जागो तुम इंसान!

रचना- सीमा शर्मा (स0अ0)
प्राथमिक विद्यालय निवाड़ा
बागपत, बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 28/11/2022

दिन- सोमवार

156

तर्ज़- सूरज कब दूर गगन से।

गरिमामयी हिन्दी

संस्कृत की लाडली बेटी, अद्भुत, अनमोल ये गहना।
भारत ने स्वाभिमान से, हिन्दी का ताज है पहना।।
ये भारत मां के माथे की बिन्दी है।
वतन की जान हिन्दी है।।

हर दिल की धड़कन बोले, सत्य, सरल, मृदु, भाषा।
गंगा- यमुना सी पावन, हिन्दी सबकी अभिलाषा।।
अर्पण है सारा जीवन, तन मन से करते वंदन।
हिन्दी प्राणों से प्यारी, करें कोटि-कोटि अभिनंदन।।
ये भारत मां के माथे की बिन्दी है।

हिन्दी संस्कार सिखाये, हिन्दी अधिकार दिलाये।
गीता, वेद, पुराण में, परचम इसका लहराये।।
यह प्रीति की भाषा न्यारी, क्यों रखते इससे दूरी ?
अंग्रेजी को देते बढ़ावा, ऐसी भी क्या मजबूरी?
ये भारत मां के माथे की बिन्दी है।

ये हिंदुस्तान का गौरव, उन्नति की राह दिखाती।
सरल, सहज शब्दों में, संस्कृति का पाठ पढ़ाती।
एकता की अनुपम देवी, हिन्दी ने देश संवारा।
भावों की जननी हिन्दी, जय हिन्द जय भारत प्यारा।
ये भारत मां के माथे की बिन्दी है।

रचना
मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 29-11-2022

दिन- मंगलवार

157

गीत - आपन देश

तर्ज़ - लोकगीत कजरी

देशवा आपन बहुते महान बा,
एहिमे बसल मोर प्रान बा ना।

देशवा हमार बाटे सोन चिरइया,
देशप्रेम के जहवाँ बहे पुरवइया।
लहर-लहर फहरे झण्डा तिरंगा,
पतित पावनी बहें मईया गंगा।
ई तिरंगा मोरे-2, देशवा के शान बा,
एहीमे बसल मोर प्रान बा ना।
देशवा आपन----------

धरती मईया उगलेली अन्न-धन के मोती,
चमकेला चम-चम विकसवा के ज्योति।
प्रान्त बाटे केतना अलग भाषा-बोली,
कुरान अऊर गीता संग पढ़ें हमजोली।
हमार देशवा के-2, इहे पहिचान बा,
एहिमे बसल मोर प्रान बा ना।
देशवा आपन----------

लक्ष्मीबाई, राणा, शिवा के हऊवे भूमि,
वीर बलिदानी देख खून से दिहलें सींची।
मईया भारती के गोदी के सभे बा ललनवा,
आँख उठाके नाही देखे कऊनो दुशमनवा।
ठाड़ सीमा पे-2, हिन्द के जवान बा,
एहिमे बसल मोर प्रान बा ना।

देशवा आपन बहुते महान बा,
एहिमे बसल मोर प्रान बा ना।

रचना-
सुमन सिंह (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय बिल्ली
वि० क्षे०- चोपन, जनपद- सोनभद्र

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 30-11-2022

दिन- बुधवार

158

बिटिया जनम

तर्ज–लोकगीत

मैं तो तेरी बेटी हूँ प्यार दो दुलार दो,
मुझे जनम लेने का जरा अधिकार दो।
प्यार दो, दुलार दो जरा पुचकार दो,
गोद में उठाकर के ममता की छाँव दो।।

विश्वदरा बनूँगी, अपाला बन जाऊँगी,
घोषा बन करके तेरा मान में बढ़ाऊँगी।
वेदो में वर्णित नारी का सम्मान दो,
मुझे जनम लेने का जरा अधिकार दो।।

कल्पना सी मुझको उड़ान भरने दो,
दीदी सुनीता सा मान करने दो।
साइना, सानिया सा मुझको विश्वास दो,
मुझे जनम लेने का जरा अधिकार दो।।

बेटी न होगी तो बहू कहाँ पाओगे,
माता के सुख से भी वंचित रह जाओगे।
बहू बेटी माता का मुझको स्थान दो,
हमें जन्म लेने का जरा अधिकार दो।।

रचना–
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
जनपद– गोरखपुर

शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

रचनाकारों की सूची

1- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
2- भावना शर्मा, मेरठ
3- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
4- मंजू शर्मा, हाथरस
5- शालिनी गुप्ता, सोनभद्र
6- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
7- जुगल किशोर त्रिपाठी, झाँसी
8- रुखसाना बानो, मिर्ज़ापुर
9- अरविंद कुमार सिंह, वाराणसी
10- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
11- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
12- ऋतु अग्रवाल, मेरठ
13- भावना तोमर, बागपत
14- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
15- सीमा शर्मा, बागपत
16- सुमन सिंह, सोनभद्र

मार्गदर्शन
राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

तकनीकी सहयोग
जितेन्द्र कुमार, बागपत
ज्योति सागर, बागपत
नैमिष शर्मा, मथुरा

संकलन :- काव्य मंजरी टीम, मिशन शिक्षण संवाद